International Journal of Applied Research 2017; 3(11): 496-500

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(11): 496-500
www.allresearchjournal.com
Received: 15-09-2017
Accepted: 23-10-2017

डॉ. नीलम ऋषिकल्प
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, रामलाल आनंद महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Correspondence
डॉ. नीलम ऋषिकल्प
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, रामलाल आनंद महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

गुरुनानकदेव जी की 'उदासियाँ'

डॉ. नीलम ऋषिकल्प

'उदासियाँ शब्द से ऐसा आभास होता है की नानक देव जीवन से उदासी थे अथवा नानकदेवजी 'उदासीन' संप्रदायी थे | यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि नानक देव जी की ' उदासियाँ' उनकी वे संसारी यात्राएँ थी जो उन्होंने जन कल्याण के लिए की थीं वे न तो संसार से उदासीन थे और न वे उदासीन सम्प्रदायी थे | नानकदेव जी की इन यात्राओं का उद्देश्य 'सतनाम' के विचार और दर्शन को जन –जन तक पहुंचाaना था | माना जाता है की जिस समय नानकदेव जी का अवतरण हुआ था वह मुग़ल बादशाह बाबर का समय था और मुग़ल काल की नींव उस समय तक भारत में पड़चुकी थी बाबर की म्रत्यु के बाद उसका बेटा हुमायूं गद्दी का उत्तराधिकारी बना |

ऐतिहासिक अध्य्यनों से ज्ञात होता है की १०वीं शताब्दी से ही भारत मुस्लिम आक्रमणों से क्षत- विक्षत होने लगा था | अफगानों और तुर्कों ने समस्त उत्तर भारत पर अपना राज्य कायम कर लिया था | दिल्ली पहुँचने का मार्ग पंजाब से होकर था इसलिए इसा सूबे के लोगों को सदेव उनके हमलों का शिकार बनना पड़ता था | अपने सैन्यबल से वे केवल हिन्दुओं को शारीरिक पीड़ा ही नहीं पहुंचाते थे अपितु तरह –तरह की टेक्स वसूली करके आर्थिक रूप से उनकी कमर तोड़ते थे | इसके साथ ही उनकी धार्मिक भावनाओं को कुचलने के लिए उनकी मूर्तियों और मंदिरों को ध्वस्त कर डाला इतना ही नहीं हिन्दुओं के गुरुकुल बंद करा दिए गए, हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया, हिन्दुओं के मनोबल को पूरी तरह समाप्त करने के लिए भारत की सभ्यता और संसक्रति को पूरी तरह कुचला गया और यह सब इतने बड़े पैमाने पर होता था कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक लोगों में इस हद तक भय ही पैदा हो गया की उनकी जीने की इच्क्षा ही मरने लगी थी गुरुनानक ने अपनी आँखों से तत्कालीन पतित परिस्थितियों का चित्रण 'रामकली दी वार' में इसका वर्णन निभीक स्वरों में किया है --

'पाप की जंज लै काब्लहु धाइआ ' जोरी मंगहीं दान वै लालो ||
सरमु धरमु दोई छापि खलोए, कूड फिरे परधानु वै लालो '||
काजीयाँ बामणा की गली थकी, अगहु पडैं सैतान वै लालो||

बाबर पाप की बारात लेकर चढ़ आया है और जबरदस्ती दान मांग रहा है शर्म ओर धर्म दोनों छिप गए हैं और झूठ प्रधान होकर घूम रहा है | काजियों ब्राह्मणों की बात समाप्त हो गयी है और विवाह के मंत्र शैतान पढवाता है|

|१४६९-१५३९ का समय इतिहास की द्रष्टि से युगांतकारी माना जाता है | इस समय भारत और यूरोप दोनों देशों में युगांतकारी घटनाएं हुई | १४८५ में यूरोप में ''टयूडर ' की स्थापना के समय आधुनिक युग का आरम्भ हुआ | यह 'रिनेसाँ ' या 'पुनर्जागरण ' काल भी कहलाता है| यह समय सामाजिक कार्यों,धार्मिक सुधारों और अन्वेषणों का समय माना जाता है भारत में भी इसी समय भक्ति आन्दोलन हुआ और ऐतिहासिक द्रष्टि से यह समय भक्ति काल के नाम से जाना जाता है | इसी समय में भारत की चारों दिशाओं से संतों और भक्तों की ओजस्वी वाणी के स्वर गूंजने लगे थे | महाराष्ट्र से एकनाथ तथा नामदेव, उत्तर भारत से रामानंद और कबीर, तुलसीदास, बंगाल से चेतन्य महाप्रभु, राजस्थान और गुजरात से बल्लभाचार्य, मीराबाई जैसे प्रमुख संतों एकता, प्रेम और भाईचारे का सन्देश दिया | इन संतों की ओजस्वी वाणी के स्वरों से दुखी ओर पीड़ित जनमन को संबल अवश्य मिला किन्तु यदि हम तत्कालीन संतो के साहित्य का विश्लेषण करें तो देखते हैं कि उस समय के संत - साधकों की चेतना जीवन की क्षण - भंगुरता पर ही केन्द्रित थी या कहें कि वह निर्वित्तिमूलक धर्म को ही सही धर्म मानते रहे। किन्तु गुरु नानक जी ने जीवन की क्षणभंगुरता में भी समष्टि के कल्याण की नई चेतना को जोड़कर नई संभावनाओं को समाज के सामने उपस्थित किया है जिसके विषय में रमेशचंद्र मिश्र का कहना है- "परिवर्तन में नित्यावर्तन के विचार के साथ,क्षणभंगुरता की चेतना से प्रेरित रहकर, अनासक्त भाव अपनाते हुए लोकमंगल की साधना में निरत बने रहना। साथ ही गुरु नानक ने प्रवृत्ति मार्ग में, निर्वित्ति तत्व की प्राण प्रतिष्ठा करके, उसे जीवन के लिए उपयोगी बनाया है। इसलिए ही वे जीवन भर अपनी निर्वित्ति चेतना को प्रवृत्ति मूलकता में समाहित कर, जीवन पक्ष को सात्विकता प्रदान करते रहे |"

भाई गुरदास ने अपनी गुरुसाखी में लिखा है "मध्य युग के संत समाज सुधारकों में गुरू नानक देव जी का स्थान विशिष्ट है। उन्होंने अपने समाज की धड़कन को समझकर उसी के अनुकूल जीवन में आचरण के उपयुक्त आदर्शों, सिद्धान्तों और उपदेशों को अपनी बानी का आभूषण बनाया। कोई भी सन्त या विचारक अपने समय के समाज, धर्म एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों को अनदेखा नहीं कर सकता। यह उक्ति नानक देव जी के सन्दर्भ में भी सत्य चरितार्थ होती है। उनके समकालीन अथवा पूर्ववर्ती साधकों राजनैतिक दबाब के कारण अपने समय का खुलकर चित्रण नहीं किया जैसा नानक देव जी ने किया है। 'गुरुनानक का सिख धर्म ' लेख में त्रिलोचन सिह लिखते है "" नामदेव को तुगलक ने कैद किया, सिकंदर लोदी ने कबीरको कैद कर अनगिनत कष्ट दिए परुन्होंने बादशाहों के अत्याचार के विरुद्ध सीधे सीधे कुछ नहीं लिखा किन्तु गुरुनानक ने पहली बार ' आसा दी वार में लिखते हैं –"प्रत्येक भिक्षुक पंडित बनने का प्रयत्न करता है | अंधे परस्त्री बन गए हैं, शरारती आदमी चौधरी बन गए हैं"

ऐतहासिक तिथियों के आधार पर गुरुनानक देव जी का जन्म गुरुनानक जी का जन्म १४६९ अप्रैल १५ को लाहौर में बेदी क्षत्रिय परिवार में तलवंडी नामक स्थान में हुआ था जो आज करतार पुर के नाम से जाना जाता है ओर 'ननकाना' नाम से प्रसिद्ध है | आपके पिता का नाम कालूराम तथा माता का नाम तृप्ता जी था | आपकी एक बड़ी बहन थी जिनका नाम नानकी था उन्हीं के नाम से नानक जी का नाम रखा गया | उनकी प्रखर बुद्धि के आगे बचपन में ही मौलवी और पंडित नतमस्तक होने लगे | घर संसार में नानक देव की कोई रूचि नहीं रहती थी बल्कि उनका ध्यान सदैव ईश्वर सद में ही लगा रहता था छोटी उम्र में ही आपका विवाह करा दिया गया था किन्तु घर, पत्नी, बच्चों का मोह इन्हें कभी बाँध नहीं पाया | भाई गुरदास जो सिखों के सामंत माने जाते हैं उनहोंने अपनी रचनाओं में गुरुनानक जी के बारे

में लिखा है 'त्रिविध ताप से जलती हुई सारी पृथ्वी को देखकर गुरुनानक ने समाधिस्थ हो गए, एक बार स्नान करने के लिए नदी में गए और तीन दिन बाद उसमें से बाहर निकले, एसा खा जाता है की समाधि टूटने पर उनके मुख से यही निकला " न कोइ हिन्दू हैं मुस्लमान " एक पिता के सब बारिक ' | डॉ राधा कृष्णन ने अपनी पुस्तक ' सेक्रिड रेटिंग्स आफ दी सिख्स " में लिखा है - सचेत होने पर नानक देव गुफा से बाहर आए और उनके मुख से निकला "" न कोई हिन्दू है न मुसलमान "इसका र्थ उनके विचार में यह था की सब कोई मानवमात्र हैं, उसी महान शक्ति की संतान हैं | इस प्रकार उनहोंने मानव के सार्वभौम बंधुत्व पर बल दिया |" ध्यान योग के बल से गुरुनानक ने यह ही ज्ञान प्राप्त किया कि 'सच्चे गुरु के बिना जगत के चारों और तमोगुण और मोह का अन्धकार फैला हुआ है इस घोर तामसी अन्धकार में जगत के समस्त स्त्री पुरुष हाहाकार कर रहे हैं | कलयुग ऐसी छुरी है कि शासक बूचड़ बन चुके है | धर्म पंख लगाकर उड़ गया है अर्थात विलीन हो चुका है झूठ, असत्य की भयानक काली रात का अखंड शासन है और सत्य का चंद्रमा कहीं उदित होता दिखाई नहीं देता | माझ दी वार में गुरु नानक लिखते है –

कलि कानी राजे कसाई धरमु पंख करी उडारिया |
कूड अमावस सच चंद्रमा दीसे ना कह चढ़िया|

गुरुनानक देव ने यह सब अपनी आँखों से देखा जहाँ तलावार की धार पर इस्लाम शासन कर रहा है वहीँ हिन्दुओं का 'वेड ज्ञान' तंत्र साधना की ओर मुड गया है| नानकदेव जी समझा गए थे यह उदासीन्ता और निराशा मानवजाति और सामाजिक भविष्य के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है नानक का सिख धर्म में डॉ त्रिलोचन सिंह लिकते हैं| "यह समय सांस्कृतिक बैचेनी, राजनैतिक उथल–पुथल एवं चारित्रिक गिरावट का समय था | जिससे सारी जाति में संसार के प्रति उदासीन द्रष्टिकोण एवं एक प्रकार का अचेतन निराशावाद पैदा हो गया था | इस समय इस बात की आवश्यकता थी की इस निराशा वादी एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से उपराम करने वाली रुचियों को झाझोड़ कर पलायनवादी स्वार्थ की निद्रा से जाग्रत किया जाए क्योंकि इन अधोगत रुचियों ने जाती एवं देश को निर्जीव एवं निराश बना दिया था |
नानकदेव जी समझ गए थे यह उदासीनता और निराशा मानवजाति और सामाजिक भविष्य के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है | परमात्मा की प्रेरणा से उन्होंने जगत के कल्याण के निमित्त उदासी का वेश बनाया और इस परम्परा का अनुसरण करते बाबा नानक जी प्रथ्वी के लोगों का कल्याण करने लिए अपने घर से निकल पड़े ' इस घटना का उल्लेख पुरातन जन्म साखी में भी मिलता है और भाई गुरदास ने इसे अपनी गुरुसाखी में लिखा है

'भारी करी तपस्सिया, बड़े भाग हरि सिउं बणि पाई ||
बाबा देखे ध्यान धरि, जलती सभी प्रिथिमी दिस आई |
बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई |

गुरु गुरुनानक जी को सरलता से समझने के लिए उनके जीवन को तीन भागों में बांटकर समझा जा सकता है | १४६९-१४९६ लगभग २७ वर्ष उनका ग्रहस्थ जीवन और आत्मबोध का समय |१४९७ – १५२१ लगभग २५ वर्ष का समय पर्यटन (यात्राएं) सभी धर्मों का अध्ययन, और अपने विचारों का प्रचार –प्रसार | १५२२-१५३९व्लग्भग १८ वर्ष रावी के किनारे करतारपुर में अवकाश कल और् सिख धर्म की नींव डाली |
नानक का सिख धर्म में डॉ त्रिलोचन सिंह लिखते हैं | "यह समय सांस्कृतिक बैचेनी,राजनैतिक उथल –पुथल एवं चारित्रिक गिरावट का समय था | जिससे सारी जाति में संसार के प्रति उदासीन द्रष्टिकोण एवं एक प्रकार का अचेतन निराशावाद पैदा हो गया था | इस समय इस बात की आवश्यकता थी की इस निराशा वादी एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से उपराम करने वाली रुचियों को झाझोड़ कर पलायनवादी स्वार्थ की निद्रा से जाग्रत किया जाए क्योंकि इन अधोगत रुचियों ने जाति एवं देश को निर्जीव एवं निराश बना दिया था |

"प्रथम यात्रा संवत 1554 वि.मै सैदरपुर (अमीना या एमनाबाद) के काष्ठ शिल्पी' 'लालो' के घर से शुरू हुई थी| वहां से वे कुरुक्षेत्र हरिद्वार होते हुए काशी, गया, पटना, जगन्नाथ पुरी में उन्होंने देवता की 'आरती ' करने का सच्चा मार्ग बताते हुए विराट देवता की आरती का उपदेश दिया इसी यात्रा के दौरान उनहोंने संवत 1561 में रावी नदी के तात पर ' करतारपुर शर बसाया था

दूसरी यात्रा संवत 1561-1568 वि. के बीच हुई, जो बगदाद होते हुए मक्का मदीना की यात्रा थी इसमें आपने ' सत्य नाम के सन्देश का प्रचार किया था |

तीसरी यात्रा संवत 1568-72 के बीच की है, जो आबू – गुजरात होते हुए दक्षिण में रामेश्वर और सिंहल क्षेत्र की यात्रा मानी जाती है इसी यात्रा में कहते हैं की सिंगुरुनानक देव जी को सरलता से समझाने के लिए तीन भागो में बांटकर समझा जा सकता है - 1469 – 1496 लगभग 27 वर्ष उनका ग्रहस्थ जीवन ओर आत्मबोध का समय | 1497-1521 लगभग 25 वर्ष का समय पर्यटन (यात्राएं) सभी धर्मों का अध्ययन, और अपने विचारो का प्रसार प्रचार | 1522-1539९लगभग 18 वर्ष रावी के किनारे करतारपुर में अवकाश काल और सिख धर्म की नींव डाली |

25 वर्ष की लम्बी यात्राओं में गुरुनानक का ध्यान किसी सीमित क्षेत्र पर न होकर सारी मानव जाति के उद्धार पर केन्द्रित था | इन यात्राओं में उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम के सभी नगरों और प्रान्तों में गए थे | ऐसा माना जाता है कि गुरुनानक देव जी ने अधिकाँश यात्राएं पैदल ही चलकर की थीं | इन यात्राओं में गुरुनानक ने हिन्दुओं, मुसलामानों, ब्राह्मणों, को सभी को मानव धर्म का महत्व बतलाकर धरती पर शान्ति का सन्देश फैलाया | उनके अनुसार ना कोई छोटा है न बड़ा उनके सन्देश में स्त्री, दलित सभी बराबर सम्मान के अधिकारी हैं | गुरुनानक से पचास वर्ष पहले योरोप की स्त्रियों को भी जो अधिकार प्राप्त नहीं थे सोल्हवीं शताब्दी में सिख समाज की स्त्रियों को वो अधिकार गुरुनानक ने दिए | भाई गुरदास ने इसका उल्लेख गुरुनानक जी की बानी में किया है," लोक वेद गुर ज्ञान विच अर्ध सरीरी मोख द्वार " अर्थात स्त्री पुरुष की अर्धांगिनी है और मोक्ष का द्वार भी है |

'गुरुनानक का सिख धर्म ' लेख में त्रिलोचन सिह लिखते है "" नामदेव को तुगलक ने कैद किया, सिकंदर लोदी ने कबीरको कैद कर अनगिनत कष्ट दिए परुन्होंने बादशाहों के अत्याचार के विरुद्ध सीधे सीधे कुछ नहीं लिखा किन्तु गुरुनानक ने पहली बार ' आसा दी वार में लिखते हैं –"प्रत्येक भिक्षुक पंडित बनने का प्रयत्न करता है | अंधे परस्त्री बन गए हैं, शरारती आदमी चौधरी बन गए हैं"गुरुनानक जी की प्रमुख शिक्षा ' किरत कमाई, नाम जप, बंड छको' अर्थात यह जीवन अच्छे कर्म करने, नाम जपने और बांटकर खाने के लिए है |

सिख जीवन की शिक्षा संसार से विमुखता नहीं अपितु संसार के बीच ही मुक्ति का मार्ग बताती है " हाथ पेर से कामकर चित निरंजन देऊ | मोक्षका द्वार संसार को त्याग कर नहीं अपितु इसी संसार में से होकर है और बहुत सरलता से मुक्ति को पाया जा सकता है | वह सरल मार्ग गुरुनानक के अंसार "हंस्दियाँ, खेडदियां, खान्दियाँ, पहनदियां विच होवे मुक्ति |

यह सत्य है की गुर नानक ने मुक्ति का जो सरल मार्ग बताया उसमें अकेले मनुष्य की ही मुक्ति नहीं अपितु सभी तरह के देहिक, दैविक तापो से समस्त मानव जाती की मुक्ति संभव है| गुरुनानक देव जी के विषय में डॉ जाकिर हुसैन के शब्दों " गुरुनानक युग, जीवन और शिक्षाएं " का उल्लेख करना महत्वपूर्ण होगा |

"'पंचम जन्म शताब्दी सुख धर्म के उस प्रवर्तक के प्रति उपयुक्त श्रधान्जली है जो शान्ति, एकता, प्रेम,और मानव भ्रातत्व भाव के प्रतीक थे और जो अपनी मानवता वादी तराशती के कारण, सभी धर्मावलम्बियों द्वारा प्रशंसित और सम्मानित थे |

नानक शाह फ़कीर |
हिन्दू का गुरु,
मुसलमान का पीर |

सहायक ग्रन्थ सूची—

१. गुरुनानक देव- जय प्रकाश मिश्र (लोक भारती प्रकाशन)

२. सप्तसिन्धु –नानकवाणी - रमेशचंद्र मिश्र

३. गुरुनानकदेव–जीवन व्रतान्त,संपादक-जसबीर सिंह

४. गुरुनानक जीवनी, युग एवं शिक्षाएं-संपादक – गुरुमुख निहालसिंह

५. गुरुनानक का सिख धर्म- डॉ त्रिलोचन सिंह